रक्तपात के कारण ही हुआ मन्दसौर से पलायन

मन्दसौर में हुए रक्तपात का दूसरा विवरण- पूर्व विवरण में मन्दसौर पर अलाउद्दीन का आक्रमण एवं उसके द्वारा किया गया रक्तपात दशोरों के मन्दसौर से पलायन का कारण बताया गया है किन्तु इसका एक दूसरा विवरण भी प्राप्त हुआ है जिसे यहां दिया जा रहा है। यह विवरण 'नई दुनिया' पत्र में 6 दिसम्बर 1976 को मन्दसौर में हुए दशोरा सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित हुआ था। इस लेख के अनुसार मन्दसौर में मुस्लिम शासनकाल में एक किले का निर्माण आरंभ किया। किले की नींव में एक ही परिवार की सात कुंआरी कन्याओं की बली की आवश्यकता थी। इस हेतु नगर में केवल दशोरा जाति के एक परिवार में सात कन्याएं पाई गई।

शासक के मांगने लालच देने पर भी जब ये कन्याएं उसे प्राप्त न हो सकीं तब विदेशी शासक द्वारा पता लगाया गया कि इतना बड़ा ब्राह्मण समुदाय श्रावणी कर्म के लिए एक दिन सामूहिक रूप से नदी पर रहता है। घरों पर केवल स्त्रियां व बच्चे ही रहते हैं। फिर श्रावणी कर्म के समय यज्ञोपवित बदलते समय मंत्र सिद्ध नहीं होते। ऐसे अवसर का लाभ उठाकर मुस्लिम शासकों ने जबरदस्ती घर में जाकर उन कुंआरी कन्याओं को लाकर महल की नींव में बलि दे दी। उसी समय शिवना तट पर श्रावणी कर्म में रत ब्राह्मणों को सेनाओं द्वारा तलवार के घाट उतार दिया गया। शिवना का जल रक्त में परिणित हो गया। नगर में हाहाकार मच गया औरतें बच्चों को लेकर जान बचाकर भागी। कुछ राजस्थान की ओर तथा कुछ मालवा निमाड़ की ओर। लेकिन सरदारों द्वारा वहां भी उनका पीछा किया गया। जो लोग सुरक्षित पहुंच गये और जिनका सेना द्वारा पीछा नहीं किया जा सका वे ब्राह्मण ही रहे थे। जहां पीछा किया गया वहां उन्होंने अपने आपको ब्राह्मण न बतलाकर वैश्य बतलाया जिससे उन्हें छोड़ दिया गया। ये दशोरा वैश्य भी वास्तव में ब्राह्मण है। इस रक्तपात में बतलाते हैं कि 1-1/4 मन यज्ञोपवित का ढेर नदी के तट पर एकत्रित किया गया। (पूर्व में 74-1/4 मन बताया गया है वह अतिश्योक्ति ही है) इस प्रकार मन्दसौर नगर दशोरा विहीन हो गया इस पर दशोरों ने प्रतिज्ञा की कि वे नगर में नहीं आयेंगे व शिवना नदी का जल नहीं पीयेंगे क्योंकि इस जल में उन्हीं का खून है।

मन्दसौर पर अन्य आक्रमण- ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर मन्दसोर पर यवनों के आक्रमण का एक वर्णन 'वीर विनोद' पृष्ठ 326 पर इस प्रकार दिया है- 'विक्रम सम्वत् 1512 (सन् 1455) में मन्दसौर लेने के वास्ते महमूद खिलजी ने चढ़ाई की। उस वक्त फौज को मन्दसौर भेजकर आप अजमेर की ओर रवाना हुआ। फौज ने वहां जाकर किले को घेर लिया। वहां गजाधर किलेदार किले के बाहर आया और बड़ी बहादुरी के साथ दुश्मनों को मारकर काम आया। बादशाह ने किले पर कब्जा किया और वहां की हुकूमत ख्वाजिह नियमतुल्लाह को देकर आप माडलगढ़ की ओर चला गया।)

(नोट- इस विवरण के आधार पर महमूद खिलजी ने मन्दसौर पर विक्रम संवत् 1512 में चढ़ाई की थी। उस समय वहां राजपूतों का शासन था। दशोरा जाति का मेवाड़ में आगमन वि.सं. 1358 के आसपास सिद्ध होता है। अतः दशोरों का मन्दसौर से पलायन इस आक्रमण से पूर्व ही हो चुका था। इस पुस्तक के 10 वें प्रकरण में 'दशोरों की तहकीकात' के अन्तर्गत भी दशोरों का मेवाड़ में आगमन तेरहवीं शताब्दी बताया गया है। इसलिए उक्त आक्रमण का सम्बंध दशोरों के पलायन से नहीं है। **-सौ. शीला जगदीश दशोरा**

लघु कथा स्नेह-सिक्त

छह वर्षीय बंटी स्कूल जाते समय माँ को हर रोज बहुत तंग करता है। न सुबह जल्दी उठता है, न जल्दी तैयार होता है और न ठीक से नाश्ता करता है। माँ चिल्लाती रहती है, मगर उस पर कोई असर नहीं होता। आज भी बंटी परेशान करने लगा तो माँ चिल्लाई- 'जल्दी से ब्रश कर ले, वरना पिटाई कर दूंगी। न मानने पर माँ ने बंटी की पीठ पर दो-तीन जमाए, पर धौल की ध्वनि किसी को सुनाई नहीं दी। हाथ तेजी से उठता तो था, लेकिन पीठ तक आते-आते धीमा पड़ जाता था। बंटी हंस रहा था- 'ऐसे दो-चार धौल और पड़ जाए तो मजा आ जाए।

-सूर्यकांत नागर

शैलेष जोशी
M. 99772-37237

शिव जोशी
M.98265-74147

जोशी
स्टेशनरी, जनरल एवं रिचार्ज स्टोर्स

42/10, स्टेशन रोड़, राऊ, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः दुकान 2856615, नि.2856515, मोबाईल (शेलेष) 99772-37237, 94240-53997